अध्यक्ष डियटर एफ. उक्डोर्फ द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार

परिपूर्ण प्रेम भय को दूर करता है

चलिये हम अपने भय को एक तरफ रखते है और आनन्द,इंसानियत,आशा.और दृढ़ भरोसे के साथ जीते है कि प्रभु हमारे साथ है ।

मेरे प्यारे भाईयों और बहनों,प्रिय दोस्तों,यह एक अच्छा सौभाग्य और खुशी है संसारभर के गिरजा के रुप में परमेश्वर और उनके बच्चों के प्रति विश्वास और प्रेम में एकत्रित होना ।

मैं विशेषकर हमारे प्रिय अध्यक्ष, भविष्यवक्ता थामस एस. मानसन की उपस्थित के लिये आभारी हूं,हम हमेशा आपके शब्दों के निर्देश,सलाह,और ज्ञान को मन में लेते है । हम आपसे प्रेम करते है,अध्यक्ष मानसन,और हम हमेशा आप के लिये प्रार्थना करते है ।

सालों पहले, जब मैं फ्रॅंक्फट,जुर्मनी में स्टेक अध्यक्ष के रुप में सेवा कर रहा था, एक प्रिय लेकिन नाखुश बहन ने मुझ से एक स्टेक सभा के अन्त में आकर याचना की ।

"क्या यह भयानक नहीं है ? " वह बोली । "यहां पर आपकी वार्ता के दौरान चार या पांच लोग सोते है !"

मैं ने कुछ देर के लिये सोचा और जवाब दिया," मैं सुनिशिचित हूं के गिरजे कि नींद सभी नींदों में से कहीं अति सेहतमंद नींद है ।"

मेरी अद्भूत पत्नी,हेरियट, इस बदलाव को सुना और बाद में बोली कि मेरा यह जवाब सारे जवाबों में सब से अच्छा था ।

महान जागृति

कुछ सौ सालों पहले उत्तर अमेरिका में, "महान जागृति" नामक अभियान देशभर में फैला हुआ था । उसका एक प्राथमिक तत्व लोगों में जागृति फैलाना था जो आत्मिक्ता के मामलों में सोते नजर आते थें ।

युवा जोसफ स्मिथ उन प्रचारकों की उन बातों को सुन कर प्रभावित हुएं थे जो इस धार्मिक जागृति का भाग थें । यह एक कारण था ईमानदारी से प्रभु की इच्छा को व्यक्तिगत प्रार्थना में खोजकर निर्णय लेने का ।

ये प्रचारकों की नाट्य प्रवृति, प्रचार भावुकता के तरीके,संदेश के साथ जिनको उनके नरक के उग्र दहशत पर जोर दिये जाने के कारण पहचाना जाता था जोकि पापी की प्रतिक्षा में रहते थे । [1] उनके वार्ताएं लोगों को सोने नहीं देती थी–लेकिन वे कुछ बुरे सपनों के कारण हुएं थे । उनके उदेश्य और तरीके गिरजे के लोगों को भयभीत करने लगे थें ।

भय जैसे छलाना

ऐतिहासिक तौर पर, भय को अक्सर इस प्रकार उपयोग किया जाता है कि लोग गतिशील हो जाएं । माता-पिता अपने बच्चों के साथ, मालिक अपने कर्मचारियों के साथ, और राजनेता मतदाताओं के साथ इसका उपयोग करते हैं ।

विज्ञापन विशेषज्ञ भय की इस शक्ति को समझते हैं और अक्सर इसका प्रयोग करते हैं । इसलिये कुछ विज्ञापन यह अप्रत्यक्ष संदेश देते हैं कि यदि हमने सही नाशते का अनाज नहीं खरीदा या नया विडियो खेल या सेल फोन नहीं लिया, तो हम कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करने और अकेले मरने और दुखी रहने के खतरे में पड़ते हैं ।

हम इस पर हंसते और सोचते हैं कि हम इस प्रकार के बहकावे में नहीं पड़ेंगे, लेकिन कभी-कभी हम करते हैं । बुरा तब होता है, जब हम कभी कभी दूसरों से अपना काम करवाने के लिये इसी प्रकार के तरीकों का प्रयोग करते हैं ।

आज मेरे संदेश के दो उद्देश्य हैं: पहला हमें मनन और विचार के लिये विवश करना कि किस हद तक *हम* दूसरों को एवं स्वयं को प्रेरित करने के लिये भय का उपयोग करते हैं । दूसरा अन्य बहेतर तरीके का सुझाव देना ।

समस्या के साथ भय

पहले, हम समस्या के साथ भय का जिक्र करेंगे । आखिरकार, हम में से ऐसा कौन है जो भय के कारण बेहतर खाने, सीट बेल्ट पहनने, व्यायाम करने, पैसा बचाने, प्रियजनों के साथ अधिक समय व्यतीत करने, या पाप से पश्चाताप करने के लिये कभी विवश न हुआ हो ?

यह सच है कि भय का हमारे कार्यों और व्यवहार में शक्तिशाली प्रभाव होता है । लेकिन यह प्रभाव अस्थाई और कमजोर होता है । भय में शायद ही हमारे हृदयों को बदलने की शक्ति हो, और वह कभी भी उन लोगो को नहीं बदल सकता जो लोग सही से प्रेम करते और जो स्वर्गीय पिता की आज्ञापालन करते हैं ।

वे लोग जो भयभीत होते हैं हो सकता है सही बातें *बोलें* और सही काम करें, लेकिन उन्हें सही बातों का *एहसास* नहीं होता

है। वे अक्सर असहाय और नाराज, यहां तक क्रोध को भी महसूस करते हैं । समय के साथ-साथ ये अनुभूतियां अविश्वासी, अवज्ञाकारी, और विरोधी होने की ओर ले जाती हैं ।

दुर्भाग्य से, नेतृत्व करने की यह गलत धारणा केवल धर्मनिरपेक्ष संसार तक सीमित नहीं है । मुझे यह सुनकर दुख होता है कि गिरजे के सदस्य अनुचित दबाव डालते हैं --- चाहे अपने घरों में, गिरजे की नियुक्ति में, कार्यस्थलों में, या दूसरों के साथ अपने प्रतिदिन के व्यवहार में ।

अक्सर, हो सकता है लोग दूसरों को धमकाने की निंदा करते हैं, फिर भी ये इसे अपने भीतर नहीं देख पाते । वे अपने मनमाने ढंग से नियमों का पालन करने की मांग करते हैं, परन्तु जब दूसरे इन अनियमित नियमों का पालन नहीं करते हैं, तो इस प्रकार के लोग उन्हें मौखिकरूप से, भावात्मक ढंग से, और कभी-कभी शारीरिक रूप से दंड देते हैं ।

प्रभु कहते है कि "जब हम ... मनुष्यों की संतान की आत्माओं पर नियंत्रण करने या वश में करने या दबाव डालने के लिये, किसी भी प्रकार का अनुचित तरीके का उपयोग करते हैं, ... तो स्वर्ग स्वयं को बंद कर देता है [और] ईश्वर की आत्मा दुखी होती है ।" [2]

ऐसे क्षण हो सकते हैं जब हमें अपने कामों को यह विश्वास करते हुए उचित ठहराना का लालच होता है कि इसका उद्देश्य उचित है । हम यह भी सोच सकते हैं कि नियंत्रण करने, बहकाने, और कठोर होने से दूसरों का भला होगा । ऐसा नहीं है, क्योंकि प्रभु ने इसे स्पष्ट किया है, "आत्मा का फल प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, [और] कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं ।" [3]

बेहतर तरीका

जितना अधिक मैं अपने स्वर्गीय पिता को जानता हूं, उतना अधिक मैं देखता हूं कि कैसे वह अपने बच्चों का मार्गदर्शन और प्रेरित करता है । वह क्रोधित,हिंसक,या प्रतिशोधी नहीं है । [4] उसका एकमात्र उद्देश्य--उसका काम और उसकी महिमा---हमारा सलाहकार बनना, हमें उत्कृष्ट बनाना, और हमें अपनी परिपूर्णता की ओर ले जाना है । [5]

परमेश्वर ने मूसा से अपनी व्याख्या करते हुए कहा था कि वह "दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवंत, और अति करूणामय और सत्य है ।" [6]

स्वर्ग में हमारे पिता का हमारे प्रति प्रेम को समझ पाना, उसके बच्चों की समझ से बहुत परे है । [7]

क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर उन व्यवहारों को माफ कर देता या उन पर ध्यान नहीं देता जो उसकी आज्ञाओं के खिलाफ होते हैं ? नहीं, बिलकुल भी नहीं !

लेकिन वह मात्र हमारे व्यवहारों को बदलने से अधिक चाहता है । वह चाहता है हम अपनी पुरानी प्रकृति को बदलें । वह चाहता है हम अपने हृदयों को बदलें ।

वह चाहता है हम आगे बढ़ें और लोहे की छड़ को मजबूती से थाम लें, अपने भय को पराजित करें, और बहादूरी से आगे कदम बढ़ाएं और सीधे और संकरे मार्ग में चलते जाएं । वह इसे हमारे लिये चाहता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है, और क्योंकि यह आनन्द का मार्ग है ।

तो, परमेश्वर कैसे अपने बच्चों को आज के समय में उसका अनुसरण करने के लिये प्रेरित करता है ? |v

उसने अपना पुत्र भेजा !

परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र,यीशु मसीह को, हमें सही रास्ता दिखाने के लिये भेजा ।

यह अनुनय, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और सच्चे प्रेम के द्वारा है । 8 परमेश्वर हमारी तरफ है । वह हम से प्रेम करता है,और जब हम लड़खड़ते है, वह चाहते हैं की हम खड़े हो, फिर से कोशिश करें, और अतिशाक्तिशाली बनें ।

वह हमारा सलाहकार है ।

वह हमारी महान और मूल्यवान आशा है ।

वह हमें विश्वास से प्रेरित करना चाहता है ।

वह हम पर भरोसा करता है कि हम अपनी गलतियों से सीखें और सही का चुनाव करें ।

यही बेहतरीन तरीका है ! [9]

संसार की बुराईयां क्या है ?

शैतान के तरीकों में से एक, दूसरों पर दबाव डालने के लिये हम संसार की बुराइयों को आधार बनाते हैं और यहां तक बुराइयों को बढ़ाचढ़ा कर भी बताते हैं ।

निश्चितरूप से हमारा संसार हमेशा अपूर्ण रहा है, और आगे भी रहेगा । बहुत से निर्दोष लोग प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण मनुष्य की निर्दयता के शिकार होते हैं । हमारे समय में भ्रष्टाचार और दुष्टता अलग और सर्तक करने वाली है ।

लेकिन इन सब के होते हुए भी, मैं वर्तमान के अलावा संसार के इतिहास में किसी भी दूसरे दौर में रहना पसंद नहीं करूंगा । हम अभूतपूर्व संपन्नता, ज्ञान, और लाभदायक समय में रहने के लिये अत्याधिक आ

शीषित हैं । सबसे अधिक, हमारे पास यीशु मसीह के सुसमाचार की परिपूर्णता की आशीष है, जो हमें संसार के खतरों पर विशिष्ट दृष्टिकोण देती है और हमें बताती है कि इनसे कैसे बचना या व्यवहार करना है ।

जब मैं इन आशीषों के विषय में सोचता हूं, मैं अपने और अपने स्वर्गीय पिता की प्रशंसा करने और कभी समाप्त न होने वाला उसके बच्चों के प्रति प्रेम के लिये घुटनों के बल झुकना चाहता हूं ।

मैं विश्वास नहीं करता कि परमेश्वर अपने बच्चों को भयभीत करना या संसार की बुराइयों पर निर्भर रहने देना चाहता है । "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है ।" [10]

उसने हमें आनंदित होने के बहुत से कारण दिये हैं । हमें उन्हें खोजना और पहचानना है । प्रभु ने अक्सर हमें याद दिलाया है "हिम्मत रखो,"[11] "घबराओ नहीं," और "ढ़ाढ़स बांधो ।" [12]

प्रभु हमारी लड़ाई लड़ेगा

भाईयों और बहनों,हम प्रभु के छोटे बच्चे है । हम अंतिम दिनों के संत हैं । उद्धारकर्ता के आगमन के लिए उत्सुक रहने और उसे प्राप्त करने के लिये संसार को तैयार करने की प्रतिबद्धता हमारे नाम में निहित है । इसलिये,हमें परमेश्वर की सेवा

करना है और अपने अनुयाईयों से प्रेम करना है । हमें यह

स्वभाविक भरोसे के साथ,इंसानियत के साथ,और किसी भी धर्म या लोंगो के समुह को गलत तरह से कभी नहीं देखना है । भाईयों और बहनों, हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और आत्मा की आवाज पर ध्यान देने से प्रभारित

किया गया है, ताकि हम "मानव पुत्र के आगमन के समय, और चिन्हों को जान सकें ।" [13]

इसलिये, हम संसार की चुनौतियों के प्रति लापरवाह नहीं हैं, और न ही हम अपने समय की कठिनाइयों से अनजान हैं । लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अपने आप पर या दूसरों पर भयभीत होने का बोझ डाल दें । अपनी चुनौतियों की विशालता पर ध्यान देने के स्थान पर, क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम परमेश्वर की अनंत महानता, भलाई, और असीम शक्ति पर भरोसा कर ध्यान केंद्रित करें और यीशु मसीह के लौटने पर एक प्रसन्नतापूर्णक हृदय की तैयारी करें ?

उसके अनुबंधित लोगों के रूप में, हमें आश्चर्य करने की जरूरत नहीं कि आगे क्या होगा । इसके बजाए, हमें परमेश्वर में विश्वास, साहस, दृढ़ता, और भरोसे के साथ आगे बढ़ना चाहिए जब हम आने वाली चुनौतियों और अवसरों का सामना करते हैं । [14]

हम शिष्यता के मार्ग पर अकेले नहीं चलते । "प्रभु हमारा परमेश्वर हमारे संग चलने वाला है, वह हमें धोखा न देगा और न अकेला छोड़ेगा ।" [15]

"प्रभु तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम शान्ति पाओ ।" [16]

भय का सामना करने पर, आओ हम अपने साहस को प्राप्त करें, अपने विश्वास में

हों, और इस प्रतिज्ञा में निडर भरोसा रखें कि "जितने हथियार जो हमारी हानि के लिये बनाए गए हैं कोई सफल न होंगे ।" [17]

क्या हम संकट और मुसीबत के समय में रह रहे हैं ? अवश्य ही हम रह रहे हैं ।

परमेश्वर ने स्वयं कहा है, "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परंतु ढाढस बांधों; मैंने संसार को जीत लिया है ।" [18]

क्या हम इस भरोसे पर विश्वास और इसके अनुसार कार्य कर सकते हैं ? क्या हम हमारे वचनबद्धता और पवित्र अनुबंधों के स्तर तक जी सकते है ? क्या हम चुनौती की परिस्थिति में भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर सकते है ? अश्वय ही हम कर सकते हैं !

हम कर सकते है क्योंकि परमेश्वर ने वादा किया सारी बातें मिलकर हमारी भलाई के लिये एकसाथ काम करेंगी, यदि हम सीधाई से चलते हैं ।"[19] इसलिये, हम अपने डर को एक तरफ रखें, आओ हम आनंद, आशा, और गहरे विश्वास में रहें कि प्रभु हमारे साथ है ।

परिपूर्ण प्रेम भय को दूर करता है

मसीह में मेरे प्यारे मित्रों, मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, यदि आप स्वयं को भय या चिंता में पाते हैं, या यदि आप पाते हैं कि आपके शब्द, व्यवहार, या कार्य दूसरों में भय का कारण हैं, मैं अपनी पूरी आत्मा की सार्म्थय के साथ प्रार्थना करता हूं कि हम इस भय से मुक्त हो जाये उन प्रतिशेधक भय के दिव्य रूप से नियुक्तो के द्वारा:मसीह का शुद्ध प्रेम, क्योंकि "परिपूर्ण प्रेम भय को दूर करता है ।"[20]

मसीह का परिपूर्ण प्रेम नुकसान पहुंचाने, डराने, धमकाने, या दुख देने के प्रलोभन का नाश करता है ।

मसीह का परिपूर्ण प्रेम हमें हमारे प्रिय उद्धारकर्ता के शिष्यों के रूप में विन्रमता, शान, और साहासिक विश्वास से चलना संभव करता है । मसीह का परिपूर्ण प्रेम हमें अपने भय से आगे बढ़ने और हमारे स्वर्गीय पिता और उनके पुत्र,यीशु मसीह, की शक्ति और भलाई में पूरा भरोसा रखने का यह साहासिक विश्वास देता है ।

हमारे घरों में, हमारे कार्य-स्थलों में, गिरजे की हमारी नियुक्तियों में, और हमारे स्वयं के हृदयों में, आओ हम भय के स्थान पर अपने प्रिय मसीह के परिपूर्ण प्रेम को रखें । मसीह के प्रेम से डर को विश्वास से बदले !

उसका प्रेम हमें पहचानने,भरोसे,और हमारे स्वर्गीय पिता की भलाई में, उसकी दिव्य योजना, उसके सुसमाचार, और उसकी आज्ञाओं में प्रकट होते हुए देखने में सक्रिये करता है । [21] प्यारे परमेश्वर और हमारे अनुयायी परमेश्वर आज्ञाओं की आज्ञाकारित को आशीषों में बदलेंगे न कि बोझ में । मसीह प्रेम हमारी सहायता थोड़ा दयालु,अधिक क्षमा करने,अति ध्यान रखने,और अति उसके कार्य के प्रति समर्पित बनने में करता है ।

जैसे हमारे हृदय मसीह के प्यार से भरते है, हम आत्मिक ताज़गी के साथ जागते है और हम आनन्द के साथ,भरोसे, जागकर,और हमारे प्रिय उद्धारकर्ता,यीशु मसीह की रोशनी और महिमा में जीकर चलेंगे।

मैं प्रेरित यूहन्ना के साथ गवाही देता हूं, "मसीह के प्रेम में भय नहीं होता है ।" [22] भाईयों और बहनों,प्रिय दोस्तों,परमेश्वर आपको परिपूर्णरुप से जानता है । आप से परिपूर्णरूप से प्रेम करता है । वह जानता है कि आपके भविष्य में क्या है, और वह चाहता है आप "डरें नहीं, बल्कि विश्वास रखें " [23] उसके परिपूर्ण प्रेम में बने रहें ।" [24] यीशु मसीह के नाम मे यही मेरी प्रार्थना और आशीष है,आमीन ।

टिपण्णी

1. George Whitefield and Jonathan Edwards are two prominent examples of this kind of preacher.
2. सिद्धान्त और अनुबंध 121:37
3. गलितियां 5:22–23
4. On one occasion, the Savior wanted to enter a village of the Samaritans, but the people rejected Jesus and would not receive Him into their village. Two of His disciples were deeply offended by this and asked, “Lord, do You want us to command fire to come down from heaven and consume them?” Jesus answered with this caution: “You do not know what manner of spirit you are of. For the Son of Man did not come to destroy men’s lives but to save them” (see Luke 9:51–56, New King James Version [1982]).
5. देखें मुसा1 :39; देखें इफिसियों 3:19 को भी देखें ।

6. निर्गमन 34:6

7. देखे इफिसियों 3:19

8. See Doctrine and Covenants 121:41. Surely if God expects us, His mortal children, to behave this way toward each other, He—a perfect being possessed of every virtue—would be the model for such behavior.

9. स्वर्ग में पृथ्वी-पूर्व परिषद परमेश्वर के चरित्र को दर्शाने का एक उत्तम अध्ययन विषय है । वहां हमारे स्वर्गीय पिता ने हमारे अनंत प्रगति के लिए उसकी योजना प्रस्तुत की थी । उस योजना के प्रमुख तत्व स्वतंत्रता, आज्ञाकारिता और मसीह के प्रायश्चित के माध्यम से उद्धार शामिल हैं । यद्यपि लूसिफर ने एक अलग दृष्टिकोण वाला प्रस्ताव रखा था । उसे गारंटी दी कि सभी को इसका पालन करना होगा-कोई भी नहीं खोएगा । इसे पूरा करने के लिए एकमात्र तरीका अत्याचार और बाध्यता के माध्यम से होगा । लेकिन हमारे प्यार स्वर्गीय पिता ने ऐसी किसी भी योजना की अनुमति नहीं दी थी। उन्होंने अपने बच्चों की स्वतंत्रता को मूल्यवान समझा । वह जानते थे कि यदि हम सही मायने में सीखना चाहते हैं तो हमसे गलतियां होंगी । और इसलिये उन्होंने एक उद्धारकर्ता उपलब्ध किया, जिसका अनंत बलिदान हमें पाप से शुद्ध और हमारे परमेश्वर के राज्य में वापस प्रवेश करने की अनुमति प्रदान कर सकता है ।

जब स्वर्ग में हमारे पिता ने देखा कि उसके बहुत से प्यारे बच्चों को लूसिफर द्वारा बहकाया गया है, क्या उन्होंने अपनी योजना का पालन करने के लिए उन्हें बाध्य किया था ? क्या उन्होंने भयभीत किया या धमकी दी जो लोग इस तरह का भयानक चुनाव कर रहे थे ? नहीं । हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर निश्चित रूप से इस विद्रोह को रोक सकते थे । वह अपनी इच्छा से असंतुष्टों को मजबूर कर सकते थे और उन का पालन के लिये मजबूर करते । लेकिन इसके बजाय, उसने स्वयं के लिए चयन करने को अपने बच्चों को अनुमति दी ।

10. 2 तीमुथियुस 1:7.

11. देखे, उदाहरण के लिये.यहोशु 1:9; यशायाह 41:13; लूका 12:32; यूहन्ना 16:33; 1पतरस 3:14; सिद्धान्त और अनुबंध 6:36; 50:41; 61:36; 78:18 ।

12. लूका 12:32

13. सिद्धान्त और अनुबंध 68:11.

14. मुसा ने अपने दिनों में लोगों को सलाह दी आज भी लागू होती हैः डरो मत,... उद्धार का काम देखो,जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा" (निर्गमन 14:13, New King James Version).

15. व्यवस्थाविवरण 31:6

16. निर्गमन 14:14, New King James Version

17. यशायाह 54:17

18. यूहन्ना 16:33

19. सिद्धान्त और अनुबंध 90:24; 2 कुरिन्थियों 2:14 को भी देखे, सिद्धान्त और अनुबंध 105:14.

20. 1 यूहन्ना 4:18.

21. Let us remember that the Savior came not "into the world to condemn the world; but that the world through him might be saved" (John 3:17). In fact, "he doeth not anything save it be for the benefit of the world; for he loveth the world, even that he layeth down his own life that he may draw all men unto him" (2 Nephi 26:24).

22. 1 यूहन्ना 4:18, 1 यूहन्ना 4:16 को भी देखें ।.

23. मरकूस 5:36.

24. यबून्ना 15:10

हमारे समय के लिये शिक्षा

मई 2017 से अक्टुबर 2017 से, मलकासिदिक पौरोहित्य और सहायता संस्था के अध्यय चौथे रविवार पर अप्रैल 2017 के जनरल सम्मेलन से एक या अधिक वार्ताएं से तैयार किए जाएंगे । अक्टुबर 2017 में, वार्ता अप्रैल या अक्टुबर के जनरल सम्मेलन से चुनी होनी चाहिये । स्टेक और जिला अध्यक्ष को चुनना होगा उन के क्षेत्र में कौन सी वार्ता दी,या वे इस का चुनाव बिशप और शाखा अध्यक्षों को करने दें ।

वार्ताएं बहुभाषाओं में उपलब्ध है ।

© 2017 द्वारा । सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतीः 6□16 । अनुवाद अनुमतिः 97925 249 ।

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

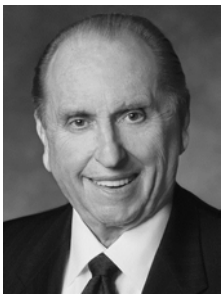

मॉरमन की पुस्तक की शक्ति

मैं आप सब से याचना करता हूं प्रतिदिन मारमन की पुस्तक का अध्ययन और चिनन्त प्रार्थनापुर्वक करें ।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, मैं बहुत गर्म जोशी से आपका अभिवादन करता हूं जब हम फिर से अंतिम-दिनों के संतों के यीशु मसीह के गिरजे के महा सम्मेलन में मिलते हैं । मेरे आज औपचारिक संदेश देने से पहले, मैं पांच नए मंदिरों की घोषणा करना चाहता हूं जिनका निमार्ण निम्न स्थानों में होगाः ब्रजीलिया, ब्रजील; महान मनीला,फिलिपियन,क्षेत्र; नायरोबी,केनीया; पोकेटिलो,आयडोह,संयुक्त राष्ट्र; और सरटोगो स्पिंग,युटाह, संयुक्त राष्ट्र ।

आज सुबह मैं मॉरमन की पुस्तक की शक्ति और इस गिरजे के सदस्य के रूप में इसका अध्ययन, मनन, और शिक्षाओं का हमारे जीवनों में पालन करने की अत्याधिक आवश्यकता के विषय में बोलूंगा । मॉरमन की पुस्तक की दृढ़ और पक्की गवाही होने के महत्व को अधिक बढ़ा-चढ़ा कर नहीं बोला जा सकता है ।

हम अत्याधिक अशांत और दुष्टता के समय में रह रहे हैं ।कौन आज संसार में व्याप्त पाप और बुराई से हमारी सुरक्षा करेगा ? मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, और उसके सुसमाचार की मजबूत गवाही हमें शुरू से अंत तक सुरक्षा प्रदान करने में मदद करेगी । यदि आप प्रतिदिन मॉरमन की पुस्तक नहीं पढ़ रहे हैं, तो कृपया इसे पढ़ें । यदि आप इसे प्रार्थनापूर्वक और सच्चाई जानने की इच्छा से पढ़ते हैं, तो पवित्र आत्मा इसकी सच्चाई आपको प्रकट करेगी । यदि यह सच्ची है---और मैं दृढ़ता से गवाही देता हूं कि यह सच्ची है---तो जोसफ स्मिथ भविष्यवक्ता था जिसने पिता परमेश्वर और उसके पुत्र, यीशु मसीह को देखा था ।

क्योंकि मॉरमन की पुस्तक सच्ची है, इसलिये अंतिम-दिनों के संतों का यीशु मसीह का गिरजा यहां पृथ्वी पर है, और परमेश्वर का पवित्र पौरोहित्य उसकी संतानों के कल्याण और आशीष के लिये पुनःस्थापित किया गया है ।

यदि आपके पास इन बातों की मजबूत गवाही नहीं है, तो इसे पाने के लिये जो आवश्यक है उसे करें । यह जरूरी है इन कठिन समयों में आपके पास अपनी स्वयं की गवाही हो, क्योंकि दूसरों की गवाहियां कुछ समय तक ही आपकी मदद करेंगी । हालांकि, एक बार प्राप्त करने के बाद, गवाही को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन और प्रतिदिन की प्रार्थना और धर्मशास्त्र के अध्ययन द्वारा सक्रिय और जीवित रखने की जरूरत होती है ।

प्रभु के कार्य में मेरे प्यारे साथियों, मैं हम सबों से प्रतिदिन मॉरमन की पुस्तक का प्रार्थना पूर्व अध्ययन और मनन करने की विनती करता हूं । जब हम ऐसा करते हैं, तो हम, प्रलोभन का विरोध करने, संदेह और भय को हराने, और अपने जीवनों में स्वर्ग की मदद पाने के लिये आत्मा की वाणी सुनने के योग्य होंगे । मैं यह गवाही अपने संपूर्ण हृदय से देता हूं, यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

© 2017 द्वारा । सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अग्रेंजी स्वीकृतिः6/16 । अनुवाद स्वीकृतिः 6/16 । अनुवाद 97925 294 का ।